

श्री गुण-विद्या का प्रथम पाठ

दुःख अशान्ति की निवृत्ति और
आनन्द-शक्ति की प्राप्ति का
पाठ निम्नाङ्कित है ।

- (१) अज्ञान विमोहित कामनाओं से तपायमान चिन्तित-क्रोधित मनुष्यों के आदर्श व आदेशों में अश्रद्धायुक्त उपराम रहना ।
- (२) शरीर यात्रा के अतिरिक्त इन्द्रिय भोगों का त्याग करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करना ।
- (३) अहंकारी बुद्धि से धन-सम्पत्ति का संग्रह न करना (*)।

(*) ममता के भाव चिन्ता-भय के दाता है । श्री ध्यानयोग दायक महापुरुषों के आदेशानुसार तन, धन से सेवा करते रहने से ममतारूपी अपराध के प्रायश्चित्त होने के विधान है अर्थात् निश्चिन्त रहने का साधन है ।

- (४) ईर्ष्या-द्वेष के संकल्पों का त्याग करते रहना ।
- (५) अहंकारी बुद्धि से उलाहना न देना ।

श्री गुणविद्या का प्रथम पाठ

- (६) किसी पर नाराज़ न होना ।
- (७) अपनी आज्ञापालन करवाने के आग्रह का त्याग करना और यथासाध्य दूसरों की आज्ञापालन करना ।
- (८) राजविधान के अनुकूल हिंसा रहित आर्थिक आय करना । प्राप्त तन, धन व ज्ञान, शक्ति द्वारा श्री ध्यानमग्न भक्तों की सेवा में रत रहना और भगवत् विधान को भंग करने वाले राजसी मनुष्यों को भगवत् पदाधिकारी बनाने में प्रयत्नशील रहना ।
- (९) ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुए आनन्द-शाक्तिदायक श्री इष्ट भगवान् के स्वरूप के स्मरण-ध्यानरूपी धन को ही संग्रह करते रहने की तीव्र अभिलाषा रखना ।
- (१०) सब प्रकार के बड़प्पन के भावों का त्याग करते हुए 'पुजारी-सेवक' भाव को धारण करने का अभ्यास करना (*) ।

(*) स्वामीभाव की अहंता अर्थात् बड़प्पन भाव का अहंकार क्रोध का दाता है अतः नमस्कारपूर्वक आज्ञापालन के अभ्यास से अहंकार की शान्ति होने का विधान है ।

श्री गुणविद्या का प्रथम पाठ

- (११) सर्वत्र जड़-चेतन में ॐ आनन्दमय भगवान् का दर्शन करने का अभ्यास करना और हर समय आसुरी मन की विपरीत गति को बदलते रहना ।
- (१२) लीलामय विराट स्वरूप विश्व भगवान् पर दोष-दर्शन, श्रवण, कथन और मनन-विचार करने का आपके पास समय ही नहीं ।
- (१३) श्री महापुरुष देव की साधारण व महाघोर संकट-दायनी आज्ञाओं को तत्परता के साथ प्रसन्नतापूर्वक पालन करने में श्रद्धा-विश्वास रखना ।
- (१४) अपनी दिनचर्या विक्षेप रहित नियमानुसार बनाए रखना (श्री गीता अ० ६/१६ - १७) ।
- (१५) अनुभवयुक्त प्रिय, हितकारक वचन बोलना ।
- (१६) सेवा-कार्य अपने लिए नीची श्रेणी का प्राप्त करने में और दूसरों के लिए श्रेष्ठ दर्जे का देने में उत्साह रखना ।
- (१७) भगवत् विधान अनुकूल शुभ कार्यो में निन्दा-अपमान की प्राप्ति होने पर अति प्रसन्न होना ।
- (१८) ब्रह्मतेजयुक्त चमकते हुए शान्त चेहरे का व प्रसन्न मुद्रा का दर्शन देना ।

श्री गुणविद्या का प्रथम पाठ

- (१९) धैर्य गुण में विश्वास रखना और सहनशीलता का अभ्यास करना ।
- (२०) हृदय को कृतज्ञता से पूर्ण रखना और विनयशीलता का आदर्श बनना ।
- (२१) अपनी सेवा, पूजा, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा कराने के भावों का त्याग करना और सत्यपात्रों की सेवा, पूजा, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा करने और कराने का अभ्यास करना (*) ।

(*) स्मृति रहे ! पूजा प्रतिष्ठा के पात्र तो पूर्ण आनन्द-शक्तिदायक श्री समाधिग्न महापुरुष देव ही हैं अन्यथा सेवा, पूजा, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा प्राप्त करने की अभिलाषा से कर्म करने से चिन्ता और क्रोध का ही विकास होता है । यथाशक्ति यथापात्र की सेवा पूजा, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा करते रहने से आनन्द-शक्ति दायक गुण-धन का संग्रह होता है ।

गुण विद्या के छात्र-छात्राएँ भगवत् आज्ञानुसार सेवा कार्य प्रसन्नता व वीरता के साथ विधिपूर्वक करते हुए, फल स्वरूप लाभ-हानि, सुख-दुःख, जय-पराजय आदि द्वन्द्वों में समचित्त रहने के पाठ को पक्का करने के अभ्यासी हों । यही उनकी श्रद्धा का परिचय है । अस्तु,

श्री गुणविद्या का प्रथम पाठ

स्मृति रहे ! धन, जन और यश, मान, प्रतिष्ठा आदि की हानि अर्थात् प्रत्येक प्रतिकूलताओं का परिणाम धर्मात्माओं के लिए बीज-वृक्ष-न्याययुक्त हितकर होने का विधान है और आसुरी-कामी मनुष्यों के लिए तो अनुकूलता भी कालान्तर में प्रतिकूलता दायक होने का विधान है।

जो समता सिद्धि के उपासक मानव सहनशीलता के साथ धैर्य को धारण कर प्रसन्नतापूर्वक श्री विश्वशांति भाग -1 के पृष्ठ १३ से १६ तक प्रकाशित सात नियमों के अनुसार जप-ध्यान और सात्त्विक सेवा-संयम करेंगे, वही श्रद्धा सम्पन्न भक्त वीर विजयी होंगे अन्यथा आसुरी ममता-अहंकार युक्त प्रेम के कामी मनुष्यों का जीवन विभिन्न विपत्तियों से युक्त दुःखी-अशान्त रहने का विधान है।

श्रद्धा-विश्वास को धारण करने के लिए श्री गीता विधान को पढ़ें ४/३४ से ४२; २/१४, १५; ९/२, ३, ३० से ३२; ६/३७ से ४०; ३/२१; १८/६२ से ६६, ७३।

हे प्रिय आत्मन् ! उपरोक्त विधान भगवत् पद-प्रभाव युक्त आनन्द-शान्ति को प्राप्त करने का पाठ है। गुणविद्या के विद्यार्थियों को श्री गीता में 'साधु व भक्त' नाम से सम्बोधित किया है।

श्री गुणविद्या का प्रथम पाठ

स्मृति रहे ! श्री गीता अ० १२/६ से २०; अ० १३/७ से ११ और अ० १८/४५ से ५८ तक में भी श्री विश्वपिता ॐ आनन्दमय प्रभु के युवराज पद प्राप्त करने के विधि-विधान का ज्ञान प्रकाशित है।

सद्गुण-विद्या के बिना विश्व में जितनी भी विद्याएँ आनन्द-शक्तिदायक मानी जाती हैं वह सभी चिन्ता, क्रोध, भय और नाराज़गीदायक हैं अर्थात् अमूल्य मानव देह को दुःखमय-अशान्तिमय बनाने वाली हैं।

विचार करें ! आसुरी अहंकार को धारण करने वाले गुरुओं की, राजा-रानियों की, धनियों की, इन्द्रिय भोगी मनुष्यों की, सन्तान तैयार करने वाले माता-पिता आदि की आशा, कर्म और ज्ञान व्यर्थ ही नहीं हुआ अपितु राजसी-तामसी कर्म करने वाले मनुष्यों का जीवन भगवत् दण्ड विधान से महाघोर पश्चातापदायक होता आया है।

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।

राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥९/१२॥

* मानव जीवन को दुःखमय-अशान्तिमय बनाने का पाठ श्री गीता अ० १६ श्लोक ४ से २०-२१ तक प्रकाशित है। श्री महापुरुषों की अमरवाणी निष्फल नहीं होती। *

* हे प्रिय आत्मन् उपरोक्त "आनन्द विद्या" के *
ज्ञान का प्रतिदिन श्रद्धा-प्रेमपूर्वक पठन और कथन
करते रहने से आपके हृदय में यह गुण धारण होना
सम्भव है अन्यथा भोगोगे राजसी-प्रेम व हर्ष तो
भुगताएँगे तामसी द्वेष-क्रोध व चिन्ता-शोक । आगे
* जैसी आपकी श्रद्धा हो वैसा ही कर्म करें । *

सच्चे भक्त के चार मुख्य गुण होते हैं—

- (१) निष्कामता (गीता अ० २/३८, ४७ से ५१) ।
- (२) अनन्य प्रेम (अ० १४/२६; ११/५५; १२/६ से २०) ।
- (३) शरणागति (अ० २/७; १८/६२ से ६६) ।
- (४) आज्ञाकारिता (अ० १८/७३) ।

दिमाग के पागलपन को शीघ्र शान्त करने के लिए
यह चार विधान हैं अर्थात् मानसिक बवण्डर को शान्त
कर दिव्य शान्ति को प्राप्त करने की विधि है (४/३९) ।

इन विधानों को पूर्णरूप से धारण न करने वाले
साधारण श्रेणी के भक्तजन कामाग्नि और क्रोधाग्नि के
संकल्प-विकल्पों से व्याकुल रहेंगे और साधन परायण
श्रद्धालु भक्त परम पदयुक्त परम आनन्द और परम
शान्ति को प्राप्त होंगे ।

(श्री गीता अ० २/६० से ६८; ३/३६ से ४३; ५/२२ से २६) ।

ॐ शान्तिमय